

# एंटीबायोटिक सम्बंधी गलतफहमियां और प्रतिरोध

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा किए गए एक विश्वव्यापी सर्वेक्षण से पता चला है कि एंटीबायोटिक दवाइयों को लेकर व्यापक गलतफहमियां व्याप्त हैं और इनकी वजह से दवा प्रतिरोधी बैक्टीरिया का विकास तेज़ी से हो रहा है।

संगठन की महानिदेशक मार्गरेट चान ने बताया है कि एंटीबायोटिक प्रतिरोध की समस्या खतरनाक स्तर पर पहुंच रही है और यदि यही क्रम चलता रहा तो जल्दी ही हम एक ऐसे युग में प्रवेश करने वाले हैं जो एंटीबायोटिक की खोज के पहले था।

एंटीबायोटिक के खिलाफ प्रतिरोध तब विकसित होता है जब बैक्टीरिया में ऐसे परिवर्तन हो जाते हैं कि वह एंटीबायोटिक दवाइयों से बच निकलता है। दवाइयों का अति-उपयोग व दुरुपयोग प्रतिरोधी बैक्टीरिया के विकास में मददगार होता है। बैक्टीरिया की प्रतिरोधी किस्मों के विकास के चलते आज टीबी, टायफाइड, गनोरिया जैसी बीमारियों का इलाज पुरानी कारगर औषधियों से नहीं हो पा रहा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा एंटीबायोटिक सम्बंधी सर्वेक्षण में 12 देशों - बार्बेडोस, चीन, मिस्र, भारत, इंडोनेशिया, मेक्सिको, नाइजीरिया, रूस, सर्बिया, दक्षिण अफ्रीका, सूडान और वियतनाम - के करीब 10,000 लोग शामिल किए गए थे। सर्वेक्षण में यह जानने की कोशिश की गई थी कि आम तौर पर एंटीबायोटिक्स के बारे में लोगों की धारणाएं क्या हैं। सर्वेक्षण में पता चला है कि लोग एंटीबायोटिक्स के बारे में कई गलतफहमियों के शिकार हैं।

जैसे 64 प्रतिशत लोगों का ख्याल है कि पेनिसिलीन आधारित दवाइयां तथा अन्य एंटीबायोटिक दवाइयां जुकाम व फ्लू का इलाज कर सकती हैं जबकि तथ्य यह है कि ये रोग वायरसों के कारण होते हैं और वायरसों पर एंटीबायोटिक

दवाइयों का कोई असर नहीं होता।

इसी प्रकार से एक-तिहाई लोगों का विश्वास था कि एंटीबायोटिक दवाइयों का कोर्स पूरा करने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि जैसे ही बेहतर महसूस करने लगें, दवाई लेना बंद कर देना चाहिए।

लगभग 75 प्रतिशत सर्वेक्षित लोगों की धारणा यह है कि एंटीबायोटिक प्रतिरोध का मतलब होता है कि उनका शरीर एंटीबायोटिक के खिलाफ प्रतिरोधी हो जाता है जबकि सच्चाई यह है कि व्यक्ति का शरीर नहीं बल्कि बैक्टीरिया दवाई का प्रतिरोध हो जाता है। इसी से जुड़ी एक और भ्रांति यह देखी गई कि लोग मानते हैं कि यदि वे एंटीबायोटिक दवाइयों का ठीक ढंग से सेवन करेंगे तो उन्हें प्रतिरोध की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। इसके पीछे मान्यता यह लगती है कि जो व्यक्ति गलत ढंग से या बार-बार एंटीबायोटिक का उपयोग करेगा वह व्यक्ति प्रतिरोधी हो जाएगा। मगर, जैसा कि पहले बताया गया, तथ्य यह है कि प्रतिरोध का विकास व्यक्ति में नहीं बल्कि बैक्टीरिया में होता है। जब यह प्रतिरोधी बैक्टीरिया किसी व्यक्ति को संक्रमित करता है तो इसका इलाज उसी दवाई से नहीं किया जा सकता।

एंटीबायोटिक्स आधुनिक चिकित्सा का एक आधार स्तंभ है। इनकी खोज की बदौलत न सिर्फ कई कीटाणु-जनित संक्रामक रोगों का इलाज संभव हुआ है बल्कि आधुनिक शल्य क्रिया भी इन्हीं की बदौलत संभव हो पाई है।

यदि एंटीबायोटिक के दुरुपयोग के चलते हम इन्हें गंवा देते हैं तो यह एक महासंकट होगा। इसलिए विश्व स्वास्थ्य संगठन को लगता है कि आम लोगों के बीच इनके बारे में जागरूकता पैदा करने के अलावा डॉक्टरों के लिए भी ज़रूरी है कि वे इन दवाइयों को कीमती वस्तु मानकर उपयोग करें। (स्रोत फीचर्स)